एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि
धुर द पैगाम
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
तपं: तपो
जपौ जपं:
मेरे
साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
मन हाली किरसाणी करणी - सरम पाणी तन खेत । नाम बीज संतोख
सुहागा - रख गरीबी वेस । भाउ करम कर जमसी - से घर भागठ देख ।
बाबा माइआ साथ न होइ । इन माइआ जग मोहिआ - विरला बूझे कोइ ।
Www.9009.co.in

"किरसाणी"

1. मन हाली किरसाणी करणी – सरम पाणी तन खेत । नाम बीज संतोख सुहागा – रख गरीबी वेस । भाउ करम कर जमसी – से घर भागठ देख ।

अर्थ:- (हे भाई ! सदा साथ निभने वाला धन कमाने के लिए) मन को किसान (जैसा उद्यमी) बना, ऊँचे आचरण को खेती समझ, मेहनत (नाम के फसल के लिए) पानी है, (ये अपना) शरीर (ही) जमीन है । (इस जमीन में) परमात्मा का नाम बीज, (बीज बो के उसे पक्षियों से

बचाने के लिए सोहागा फेरना जरूरी है, इसी तरह अगर संतोष वाला जीवन नहीं, तो माया की तृष्णा नाम-बीज को समाप्त कर देगी) संतोष (नाम-बीज को तृष्णा-पक्षियों से बचाने के लिए) सुहागा है, सादा जीवन (नाम-फसल की रक्षा करने के लिए) रखवाला है। (हे भाई ! ऐसी किसानी करने से शरीर-भूमि में) परमात्मा की मेहर से प्रेम पैदा होगा। देख, (जिन्होंने ऐसी खेती की) उनके हृदय (नाम-धन से) धनाढ हो गए।

बाबा माइआ साथ न होइ। इन माइआ जग मोहिआ - विरला बूझै कोइ।

अर्थः- हे भाई ! (यहाँ से चलने के वक्त) माया जीव के साथ नहीं जाती (ये हरेक को पता है फिर भी) इस माया ने सारे जगत को अपने वश में किया हुआ है। कोई विरला मनुष्य समझता है (कि सदा साथ निभने वाला धन और है)।

हाण हट कर आरजा - सच नाम कर वथ। सुरत सोच कर भांडसाल - तिस विच तिस नो रख। वणजारिआ सिउ वणज कर - लै लाहा मन हस।

अर्थः- (हे भाई !) उम्र की हरेक सांस को कमाई बना, इस दुकान में सदा-स्थिर रहने वाला हरि का नाम सौदा बना। अपनी सूझ के विचार-मण्डल को बर्तनों की कतार बना, इस बर्तनों की कतार में (बर्तनशाला में) हरि-नाम सौदे को डाल। ये नाम-वाणज्य करने वाले सत्संगियों से मिल के तू भी हरि नाम का व्यापार कर। इस व्यापार से कमाई होगी मन का खिलना।

सुण सासत सउदागरी – सत घोड़े लै चल । खरच बंन चगिआईआ – मत मन जाणह कल । निरंकार कै देस जाह – ता सुख लहह महल ।

अर्थः- (हे भाई ! सौदागरों की तरह हरि-नाम का सौदागर बन) धर्म-पुस्तकों (का उपदेश) सुना कर, ये हरि-नाम की सौदागिरी है, (सौदागरी का माल असबाब लादने के लिए) उच्च आचरण वाले घोड़े बना के चल, (जिंदगी के सफर में भी खर्च की जरूरत है) अच्छे गुणों को जीवन-यात्रा का खर्च बना । हे मन ! (इस व्यापार के उद्यम को) कल पर ना डालना । इस व्यापार से अगर तू परमात्मा के देश में (परमात्मा के चरणों में) टिक जाएं, तो आत्मिक सुख में जगह तलाश लेगा ।

लाइ चित कर चाकरी – मंन नाम कर कम । बंन बदीआ कर धावणी – ता को आखै धंन । नानक वेखै नदर कर – चड़ै चवगण वंन । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 595-596)

अर्थः- (हे भाई ! नौकर रोजी कमाने के लिए मेहनत से मालिक की सेवा करता है, तू भी) पूरे ध्यान से (प्रभु मालिक की) नौकरी कर (जैसे नौकर अपने मालिक के हुक्म को भुलाता नहीं, तू भी) परमात्मा मालिक के नाम को मन में पक्का करके रख, यही है उसकी सेवा । विकारों को (अपने नजदीक आने से) रोक दे, ये है परमात्मा की नौकरी के लिए दौड़-भाग है । (यदि ये उद्यम करेगा) तो हर कोई तुझे साबाशी देगा । हे नानक ! ऐसी नौकरी करने से परमात्मा तुझे मेहर की नजर से देखेगा, तेरी जीवात्मा पर चौगुना आत्मिक-रूप चढ़ेगा ।

नोट: धन कमाने के लिए आम तौर पर चार तरीके हैं: किसानी, दुकान, व्यापार और नौकरी । इस शब्द में फरमाते हैं कि दुनिया का धन यहाँ से चलने के वक्त साथ छोड़ देगा, साथ निभने वाला तो नाम-धन है, उसे इकट्ठा करने के लिए वैसे ही मेहनत करनी है जैसे किसान खेती के लिए मेहनत करता है, दुकानदार दुकान में, व्यापारी व्यापार में और मुलाजिम नौकरी में ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं – गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

एक औंकार सतिगुरू प्रसादि
गुरबाणी कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
तप: तपौ
नमौ नम:
मेरे साहिब जी
रूहानी
सतसंग
मन हाली किरसाणी करणी - सरम पाणी तन खेत । नाम बीज संतोख
सुहागा - रख गरीबी वेस । भाउ करम कर जमसी - से घर भागठ देख ।
बाबा माइआ साथ न होइ । इन माइआ जग मोहिआ - विरला बूझै कोइ ।
Www.9009.co.in